Daily Gospel Reflections in Hindi

07 July 2019

लूकस 12:22-34

BECOME RICH IN THE PRESENCE OF GOD

सच्चा धन – जब प्रभु से किसी की पैतृक संपत्ति दो भाइओं के बीच बंटवारा कराने का आग्रह किया गया, तब प्रभु ने कहा– ''किसने मुझे पंच या बंटवारा करने वाला नियुक्त किया''? (Lk. 12:14) प्रभु बंटवारा करने से इसलिए मना नहीं किया कि उन्हें सामाजिक न्याय से कोई चिड़ थी। बल्कि वे इन सब सांसारिक बातों से परे थे, उन्हें सांसारिक धन से कोई लगाव नहीं था और वे चाहते है कि हम भी उनकी तरह सांसारिक मोह–माया के बंधनों से आजाद रहें। मूर्ख धनी के दृष्टांत से वे हमें समझाना चाहते है कि हमें ईश्वर की दृष्टि में धनी होना चाहिए, न कि बड़े–बड़े बण्डारों में माल इकट्ठा करना (Lk. 12:16-21) कहीं और प्रभु ने कहा– ''सुई के नाके से होकर ऊँट का निकलना अधिक सहज है, किन्तु धनी का ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन हैं (Mk. 10:25)। ''मनुष्य को इस से क्या लाभ यदि वह सारा संसार प्राप्त कर ले, लेकिन अपना जीवन ही गंवा दें ?'' (Mt. 16:26) मतलब साफ है उनका राज्य इस संसार का नहीं है (Jn. 18:36)। इस संसार के लोग खाने–पीने, धन कमाने, कया पहनें, कैसे दिखे आदि के बारे में चिंतित रहे है। लेकिन प्रभु स्वयं और शिष्य उसके विपरीत है। हम आश्वस्त है क्योंकि हमारे पिता जानते है कि हमें इन सब चीजों की जरूरत है। हम आश्वस्त है क्योंकि पिता ने हमें राज्य देने की कृपा की है। बशर्ते कि हम सांसारिक चिंताओं को अपने दिल से निकालकर वहां प्रभु को बसाएं।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019